अथ निम्बः । तस्य नामानि गुणाँश्चाह

निम्बः स्यात्पिचुमर्दश्च पिचुमन्दश्च तिक्तकः । अरिष्टः पारिभद्रश्च हिक्कुनिर्यास इत्यपि ॥९३॥
निम्बः शीतो लघुर्ग्राही कटुपाकोऽग्निवातनुत् ।
अहृद्यः श्रमतृट्कासज्वरारुचिकृमिप्रणुत् । व्रणपित्तकफच्छर्दिकुष्ठहृल्लासमेहनुत् ॥ ९४ ॥

नीम के नाम तथा गुण—निम्ब, पिचुमर्द, पिचुमन्द, तिक्तक, अरिष्ट, पारिभद्र और हिक्कुनिर्यास ये सब संस्कृत नाम 'नीम' के हैं। नीम-शीतवीर्य, लघु, ग्राही, पाक में कटुरसयुक्त, जठराग्नि को मन्द करनेवाला, हृदय को अहितकर तथा वात, श्रम, तृषा, खाँसी, ज्वर, अरुचि, कृमि, व्रण, पित्त, कफ, वमन, कुष्ठ, हृल्लास तथा प्रमेह इन सबों का नाशक होता है ॥

अथ निम्बस्य पत्रफलयोर्गुणानाह

निम्बपत्रं स्मृतं नेत्र्यं कृमिपित्तविषप्रणुत् । वातलं कटुपाकञ्च सर्वारोचककुष्ठनुत् ॥ ९५ ॥
निम्बफलं रसे तिक्तं पाके तु कटुभेदनम् । स्निग्धं लघूष्णं कुष्ठघ्नं गुल्मार्शःकृमिमेहनुत् ॥९६॥

'नीम' के पत्ते तथा फलों के गुण : नीम के पत्ते—नेत्र को हितकर, कृमि-पित्त-विष के नाशक, वातकारक, पाक में कटुरसयुक्त तथा सभी प्रकार की अरुचि और कुष्ठ को दूर करने वाले होते हैं। नीम का फल—रस में तिक्त तथा पाक में कटु, मल का भेदन करने वाला, स्निग्ध, लघु, उष्णवीर्य कुष्ठ, गुल्म, बवासीर, कृमि तथा प्रमेह का नाशक होता है ॥ ९५-९६ ॥

४३ नीम

हि०–नीम। **बं०**–निम, निमगाछ। **म०**–निंब, लिंब, कडूनिंब, बालंतनिंब। **गु०**–लींबडो, लीमडो। **पं०**–निंब, निम। **उरि०**–नीमो। **ता०**–वेप्पु, वेम्बु। **ते०**–वेप। **मल०**–आर्यवेप्पू, वेप्पू। **क०**–वेविनमर। **अ०**–आजाद दख्तुल हिंद। **फा०**–नीब। **अं०**–Neem Tree (नीम ट्री), Margosa (मार्गोसा), Indian Lilac (इन्डियन् लिलॅक्)। **ले०**–*Azadirachta indica, A. Juss* (एझाडिरेक्टा इन्डिका, ए. जस); *Melia azadirachta, Linn.* (मेलिआएझाडिरेक्टा, लिन.)। Fam. Meliaceae (मेलिएसी)।

नीम के लगाये वृक्ष इस देश के सभी प्रान्तों में पाये जाते हैं और सभी लोग इसको भली-भाँति जानते हैं। दक्षिण एवं बर्मा के शुष्क जंगलों में यह जंगली स्वरूप में पाया जाता है। यह ४०–५० फीट ऊँचा, अनेक शाखा-प्रशाखाओं से युक्त, सघन और छायादार होता है। छोटी-छोटी टहनियों के अन्त में ८–१५ इञ्च लम्बे असमपक्षवत् पत्ते रहते हैं। पत्रक–संख्या में १४–१९, विपरीत या एकान्तर, टेढ़े, मालाकार, ४–५ अंगुल लम्बे, १–१½ अंगुल चौड़े, नुकीले और दन्तुर होते हैं। वसन्त ऋतु में पुराने पत्ते गिर जाते हैं और नवीन पत्ते निकलने के साथ छोटे छोटे सफेद रंग के सुगंधयुक्त फूलों के गुच्छे लगते हैं। फल–करीब ½ इञ्च खिरनी के समान लम्बाई लिये गोल होते हैं जिसमें एक एक बीज होते हैं। बीजों को निम्बोली कहते हैं। इसकी छाल से एक स्वच्छ, चमकीला अम्बर के वर्ण का गोंद निकलता है।

इसकी छाल करीब १० मि. मि. मोटी, बाहर से भूरे-धूसर वर्ण की, खुरदरी शल्कसम एवं फटी हुई तथा अन्दर से पीताभ, परतदार एवं मोटे रेशों से युक्त होती है।

इसकी छाल, मूलत्वक्, पत्र, गोंद, फल, बीज, पुष्प, ताडी एवं तैल का चिकित्सा में व्यवहार किया जाता है।

रासायनिक संगठन—इसके काण्डत्वक् में एक कडुवा पदार्थ मार्गोसीन (Margosine), निम्बिडिन (Nimbidin, 0·5%), निम्बिन (Nimbin, $C_{28}H_{40}O_8$, 0·03%), निम्बिनिन् (Nimbinin $C_{27}H_{30}O_9$), निम्बोस्टेरोल् एवं पुष्पों में पाये जाने वाले उड़नशील तैल की तरह एक उड़नशील तैल ये पदार्थ पाये जाते हैं। इसमें करीब ६% टॅनिन भी रहता है। इसके बाह्यत्वक् में टॅनिन अधिक रहता है तथा अन्तस्त्वक में कडुवे पदार्थ पाये जाते हैं। इसके अन्तस्त्वक् का क्वाथ बनाना चाहिये। इसके पत्तों में भी कडुवा पदार्थ रहता है जो छाल की अपेक्षा कम मात्रा में होते हुए भी जल में अधिक मात्रा में एवं जल्दी घुलता है।

इसके बीजों में ३१% तक एक तेल रहता है जो गहरे पीले रंग का, कडुवा, तीता एवं दुर्गन्धयुक्त होता है। इसमें करीब २% कडुवे पदार्थ रहते हैं जिनमें निम्बिन, निम्बिनिन, निम्बिडिन एवं तैल में घुलनशील एक द्रव निम्बिडोल (Nimbidol, 0·6%) ये पाये जाते हैं। इनके अतिरिक्त इस तैल में ओलिक् ॲसिड (Oleic acid, 49–61·9%), लिनोलिक् ॲसड (Linoleic acid, 2·12–15%), पामिटिक् ॲसिड् (Palmitic acid, 12·62–15%), स्टियरिक् ॲसिड् (Stearic acid, 14·4–21·3%), ॲरॅचिडिक् ॲसिड् (Arachidic acid, 1·3–1·8%), एवं लिग्नोसेरिक ॲसिड् (Lignoceric acid, 0·74%) ये रहते हैं। इस तैल के साबुन बनाने लायक भाग से बचे हुए हिस्से में निम्बोस्टेरॉल रहता है।

इस तैल में 0 427% गंधक पाया जाता है। इसके तैल से अत्यन्त कडुआ एवं जल में घुलने वाला सोडियम् मार्गोसेट (Sodium margosate, B. C. P. W.) नामक एक लवण बनाया गया है।

गुण और प्रयोग—इसकी अन्दर की छाल शीतल, कडुवी, पौष्टिक, नियतकालिकज्वर-प्रतिबन्धक, ग्राही, त्वग्दोषहर, कृमिघ्न एवं रसायन है। सम्पूर्ण छाल अधिक ग्राही होती है। त्वचा पर निम्बत्वक् की क्रिया सोमल की तरह होती है। इसका ज्वरघ्न गुण सिकोना की तरह है। इसकी मूलत्वक् कृमिघ्न (आन्त्रिक) मानी जाती है।

इसके पत्ते शोथघ्न, त्वचा के लिये उत्तेजक, त्वग्दोषहर, व्रणशोधक, व्रणरोपक, कृमिघ्न, प्रतिदूषक, यकृतोत्तेजक, कुष्ठहर एवं अधिक मात्रा में वामक होते हैं।

इसका तेल उष्ण, वातहर, प्रतिदूषक, व्रणशोधक, व्रणरोपक, उत्तेजक, केश्य, कृमिघ्न, कुष्ठघ्न एवं रसायन है। निम्ब के सभी अङ्गों की अपेक्षा इसका तैल अधिक प्रभावशाली है।

(१) नीम की छाल का चूर्ण **मलेरिया** के लिये बहुत लाभदायक है। शोथयुक्त ज्वर एवं विषमज्वर तथा ज्वर के पश्चात् दौर्बल्य दूर करने के लिये इसके चूर्ण या क्वाथ का उपयोग किया जाता है। किनीन आदि से जब लाभ नहीं होता तब इसका उपयोग करते हैं। ज्वर में इसके साथ धनियाँ, सोंठ, लौंग, दालचीनी या मिरिच, चिरायता तथा ग्राहीपन कम करने के लिये कुटकी का उपयोग किया जाता है। श्वेतप्रदर में बबूल की छाल एवं नीम की छाल का क्वाथ लाभदायक होता है।

(२) इसके पत्तों का उपयोग त्वचा के विकार, व्रण, क्षत तथा कुष्ठ में किया जाता है। चर्मविकारों में इससे स्नान कराया जाता है। व्रण, पामा, कण्डू, छाजन, अरुंषिका, दूषितव्रण, पुराने व्रण एवं अन्य चर्मविकारों में इससे स्नान कराते हैं, इसके पत्तों को पीस कर बाँधते हैं या इससे सिद्ध घृत का मलहम आदि लगाते हैं। अर्श, बद, गांठ एवं व्रणशोथ में इसका पोल्टिस बाँधा जाता है। विचर्चिका (Weeping eczema) में यदि इसके पत्तों को पीस कर बाँध दें और जब तक अपने से निकले नहीं तब तक रहने दें तो बहुत जल्दी लाभ होता है। कुष्ठ में इसके पञ्चाङ्ग के चूर्ण या क्वाथ का स्नान, पान एवं लेपादि में उपयोग होता है। इसके पत्तों को पीस कर आँवला या हरीतकी के साथ खाने से कुष्ठ में लाभ होता है। यद्यपि इसके पत्तों का स्वरस आन्त्र के कृमियों (केंचुआ) में लाभदायक माना जाता है तथापि ओकेस और म्हसकर का मत है कि ४ ड्राम की मात्रा में इसके प्रयोग से कोई लाभ नहीं हुआ। इसके देने के पहले और पश्चात् विरेचन नहीं दिया गया था। फिरंग में इसका रस १ पाव की मात्रा में सुबह शाम पिलाते हैं। सोजाक में शिश्न में शोथ होकर मूत्र रुकता है तब इसके क्वाथ में रोगी को बैठाते हैं जिससे पेशाब होने लगती है। कामला में अधिक मात्रा में इसका स्वरस मधु के साथ सुबह पिलाया जाता है। इसके साथ सोंठ भी देते हैं। कभी-कभी अधिक मात्रा से वमन हो जाता है। प्रसूता को प्रथम दिन से ही इसका स्वरस देने से हर प्रकार से लाभ होता है। इससे गर्भाशय का संकोच होकर स्राव की शुद्धि होती है एवं शोथ कम होता है। भूख लगना, पाखाना साफ होना, ज्वर न आना या कम आना एवं बच्चे का स्वास्थ्य अच्छा रहना ये सब लाभ इसके देने से होते हैं। मसूरिका (Small pox) में इसके पत्तों से हवा की जाती है एवं रोगी के बिस्तर पर इसको बिछाते हैं। इसके कोमल पत्तों की दो रत्ती की गोली बना कर मुलेठी के साथ देने से लाभ होता है। पत्तों को पुस्तक तथा कपड़े आदि में रखने से कीड़े नहीं लगते। ज्वर में घृत एवं मधु के साथ इसके पत्तों का धूप दिया जाता है।

(३) इसके तैल का कुष्ठ फिरंग, श्लीपद, व्रण, दूषितव्रण, गण्डमाला, आमवात एवं विषमज्वर में उपयोग किया जाता है। कुष्ठ, फिरंग, त्वचा के रोग एवं विषमज्वर आदि में इसको ५-१० बूँद की मात्रा में दिन में २ बार देते हैं। इसका बाह्य प्रयोग भी करते हैं।

अपची, नाडीव्रण, पामा, कण्डू, छाजन, दद्रु, विसर्प, आमवात, उदर्द, शीतपित्त एवं दूषित व्रण में तैल को लगाते हैं। कुष्ठव्रण में इसके साथ चौलमोगरा का तैल मिलाकर लगाते हैं। तैल से दाह होने पर इसमें ½ तिलतैल मिलाकर उपयोग करना चाहिये। आमवात में इसकी मालिश के साथ-साथ इसका आन्तरिक प्रयोग भी किया जाता है। शिरःशूल में सर पर इसको मलते हैं। खालित्य एवं पालित्य में इसके नस्य का विधान है। आन्त्रिक कृमि में पत्रस्वरस की तरह इसके तैल को १–४ ड्राम की मात्रा में देने से लाभ नहीं देखा गया, यद्यपि पूर्ण मात्रा से किसी किसी में अतिसार, हृल्लास तथा बेचैनी होती है।

इसके तैल से बने हुए लवण सोडियम या पोटॅशियम् मार्गोसेट (Margosate) का उपयोग त्वचा, मांसपेशी तथा सिरा के द्वारा किया जाता है। इसका शरीर में जीवाणुविरोधी कार्य होता है। पामा (Scabies), छाजन (Eczema) एवं स्फोट (Pemphigus) में इससे अच्छा लाभ होता है। फिरंग की प्रथम एवं द्वितीयावस्था में चिकित्सा जिनमें नहीं की गई उनकी अपेक्षा इसके द्वारा अधिक लाभ होता है। इसमें इसे ०.०१–०·३२ ग्राम सूचिकाभरण द्वारा दिया जाता है। फिरंग की तृतीयावस्था या द्वितीयावस्था के अन्त के ग्रन्थि (गमा) तथा त्वचा के विकार इससे जल्दी अच्छे होते हैं, यद्यपि इसका परिणाम पाश्चात्य चिकित्सा की अन्य पारद, आयोडाइड आदि औषधियों के इतना संतोषजनक नहीं होता। कुष्ठ एवं फिरंगादि में तैल की अपेक्षा इसके सूचिकाभरण एवं मार्गोसिक् ॲसिड के स्थानिक प्रयोग से अधिक लाभ होता है।

(४) इसके फल विरेचक एवं स्नेहन हैं तथा कृमि, अर्श एवं मूत्रविकार में इनका उपयोग करते हैं। अर्श में इसके बीज को गुड़ के साथ खिलाते हैं।

(५) इसके पुष्प का फांट ज्वर के पश्चात् बल्यरूप में एवं पाचन की खराबी में देते हैं।

(६) इसकी ताड़ी में शर्करा, ॲल्ब्युमिन, गोंद एवं लौह, खटिक तथा अल्युमिनिअम् के लवण होते हैं। यह दीपन, पोषक, बलप्रद, कृमिघ्न, रसायन एवं चर्मविकारों में लाभदायक मानी जाती है।

मात्रा—अन्तस्त्वक् चूर्ण २–४ माशा; स्वरस ½–१ छटाँक; तैल ५–१० बूँद।

५७. निम्ब

परिचय

गण—कण्डूघ्न, तिक्तस्कन्ध (च०); आरग्वधादि, गुडूच्यादि, लाक्षादि (सु०)।

कुल—निम्ब-कुल (मेलिएसी-Meliaceae)।

नाम—लै०-एजाडिरेक्टा इण्डिका (Azadirachta indica A. Juss); सं० निम्ब (निम्बति सिञ्चति स्वास्थ्यम्—जो स्वास्थ्य को बढ़ावे); पिचुमर्द (पिचुं कुष्ठं मर्दयति नाशयति—कुष्ठ को नष्ट करने वाला); अरिष्ट (न रिष्टमशुभमस्मात्—जिससे शरीर को कोई हानि न हो); हिंगुनिर्यास (हींग के समान गोंद जिससे निकले); हि०-नीम; बं०-निम; म०-कडूनिंब, गु०-लीमडो; ता०-वेंबु, वेंपु; पं०-निंब; मल०-वेप्पु; सि०-निमु; फा०-आज़ाद दरख्ते हिन्दी; अ०-आजादरख्तुल हिन्द; अं०- मार्गोसा ट्री (Margosa tree)।

स्वरूप—इसका वृक्ष ४०-५० फीट ऊँचा होता है। **काण्ड**-सरल होता है जिससे चारों ओर शाखा-प्रशाखायें निकली रहती हैं। **त्वक्**-स्थूल और खुरदरी तिरछी या लम्बी परिखाओं से युक्त होती है। बाहर की ओर यह गहरी भूरी तथा भीतर की ओर लाल रङ्ग की होती है। इससे एक प्रकार का रस (नीरा-जिसे नीम की ताड़ी कहते हैं) तथा निर्यास निकलता है। **पत्र**-विषमपक्षवत्, ८-१५ इञ्च लम्बे होते हैं। **पत्रक**-१-३ इञ्च लम्बे, ½-१½ इञ्च चौड़े, भालाकार, दन्तुर, विषमपार्श्व, ५-६ जोड़ों में होते हैं। **पुष्प**-अक्षीय मञ्जरियों में, छोटे, श्वेतवर्ण होते हैं। **फल**-लम्बगोल, ½-¾ इञ्च लम्बे, कच्ची अवस्था में हरे तथा पकने पर पीले होते हैं। इनका आकार खिरनी से बहुत मिलता-जुलता है। इन्हें 'निमौली' कहते हैं। प्रत्येक फल में एक बीज होता है जिससे तैल निकलता है। पतझड़ में इसकी पत्तियाँ झड़ जाती हैं और वसन्त में ताम्रलोहित पल्लव निकलते हैं। पुष्पोद्गम वसन्त में होता है और फल ग्रीष्म ऋतु के अन्त एवं वर्षा के प्रारम्भ में लगते हैं।

उत्पत्तिस्थान—यह भारत में सर्वत्र होता है। पश्चिमोत्तर भारत के शुष्क प्रदेश में यह विशेष रूप से मिलता है।

रासायनिक संघटन—छाल में Nimbin (०.०४ %), Nimbinin (०.००१%), Nimbidin (०.४%), Nimbosterol (०.०३%), उड़नशील तैल (०.०२%), टैनिन (६%) और मार्गोसिन नामक एक तिक्त घटक होता है। बीजतैल में गन्धक के अतिरिक्त एक क्षाराभ, राल, ग्लाइकोसाइड तथा वसाम्ल होते हैं। निम्बनीरा में स्वतन्त्र एमिनोएसिड होते हैं। निम्ब के सारभाग में टैनिन, कैलशियम, पोटाशियम तथा लौह के लवण पाये जाते हैं। बीजों में ४५% स्थिर तैल होता है।

गुण

गुण—लघु
रस—तिक्त, कषाय
विपाक—कटु
वीर्य—शीत

कर्म

दोषकर्म—यह तिक्त होने से कफ और पित्त का शमन करता है।

संस्थानिक कर्म-बाह्य—इसका पत्र एवं त्वक् जन्तुघ्न, व्रणपाचन, व्रणशोधन, पूतिहर, दाहप्रशमन एवं कण्डूघ्न है। बीजों का तैल-व्रणरोपण, कुष्ठघ्न एवं वेदना-स्थापन है।

आभ्यन्तर-पाचनसंस्थान—यह तिक्त-कषाय होने से रोचन, ग्राही (बीज-भेदन), कृमिघ्न और यकृदुत्तेजक है। तिक्त होने के कारण यह पित्त के द्रवत्व का शोषण करता है जिससे अम्लपित्त में लाभकर है।

रक्तवहसंस्थान—तिक्तरस होने के कारण यह रक्त को शुद्ध करता है तथा रक्त-विकारजन्य शोथ को दूर करता है।

श्वसनसंस्थान—तिक्त होने से कारण यह कफघ्न है।

मूत्रवहसंस्थान—यह तिक्त होने से मूत्रगत कफपैत्तिक विकारों (प्रमेहों) को दूर करता है।

प्रजननसंस्थान—इसके बीज गर्भाशयोत्तेजक है।

त्वचा—तिक्त होने से कुष्ठघ्न एवं शीत होने ने दाहप्रशमन है।

सात्मीकरण—यह मधुमेह को नष्ट करता है। इसका नीरा बल्य है।

ताप्क्रम—तिक्त होने से यह आमपाचन, ज्वरघ्न और विशेषतः विषमज्वर-प्रतिबन्धक है।

नेत्र—इसकी कोमल पत्तियाँ और पुष्प चक्षुष्य है तथा अनेक नेत्ररोगों को दूर करते हैं।

उत्सर्ग—इसका उत्सर्ग त्वचा के द्वारा होता है अतः उस पर इसकी उत्तेजक क्रिया होती है।

प्रयोग

दोषप्रयोग—इसका प्रयोग कफपित्तजन्य विकारों में करते हैं।

संस्थानिक प्रयोग-बाह्य—विद्रधि, ग्रन्थि और व्रण में इसकी पत्तियों का लेप करते हैं। कण्डू आदि त्वग्दोषों में पत्रक्वाथ से स्नान कराते हैं तथा इसका तैल लगाते हैं। अपची और नाडीव्रण में इसके तैल की वर्ति देते हैं और सन्धिशोथ, आमवात आदि वातिक रोगों में इसका अभ्यङ्ग करते हैं। सिर के कृमियों को मारने के लिए बीजों को पीस कर लगाते हैं। पालित्य और खालित्य रोग में तैल का नस्य देते हैं। दाह में पत्रस्वरस का फैन लगाते हैं।

आभ्यन्तर-पाचनसंस्थान—अरुचि, वमन, ग्रहणी, कृमि तथा यकृद्विकारों में इसकी छाल का स्वरस मधु के साथ देते हैं। ऊर्ध्वग अम्लपित्त तथा कफपैत्तिक छर्दि के लिए यह उत्तम औषध है। अर्श एवं विबन्ध में इसके बीज का प्रयोग किया जाता है।

रक्तवहसंस्थान—विविध रक्तविकारों, फिरंग, उपदंश आदि में इसका प्रयोग करते हैं। शोथ में भी लाभकर है।

श्वसनसंस्थान—कासरोग में भी इसकी छाल का रस या क्वाथ देते हैं।

मूत्रवहसंस्थान—बहुमूत्रता रोग में इसका प्रयोग होता है।

प्रजननसंस्थान—कष्टप्रसव एवं सूतिकारोग में बीजों का चूर्ण देते हैं।

त्वचा—कुष्ठरोग तथा दाह में इसका प्रयोग होता है।

सात्मीकरण—निम्बतैल मधुमेह में प्रयुक्त होता है। इसका नीरा धातुक्षय, यक्ष्मा आदि को दूर करता है।

तापक्रम—यह ज्वर विशेषतः विषमज्वरों एवं जीर्णज्वरों में प्रयुक्त होता है।

नेत्र—अभिष्यन्द आदि नेत्ररोगों में पुष्प तथा पत्र का स्वरस डालते हैं। इसका अन्तःप्रयोग भी करते हैं।

प्रयोज्य अंग—पुष्प, पत्र, त्वक्, बीज, तैल।

मात्रा—त्वक् चूर्ण—२–४ ग्रा०; पत्रस्वरस—१०–२० मिलि०; तैल—५–१० बूंद।

विशिष्टयोग—निम्बादिचूर्ण, निम्बारिष्ट, निम्बहरिद्राखण्ड।

× × × ×

'निम्बः स्यात् पिचुमर्दश्च पिचुमन्दश्च तिक्तकः। अरिष्टः पारिभद्रश्च हिंगुनिर्यास इत्यपि॥
निम्बः शीतो लघुर्ग्राही कटुस्तिक्तोऽग्निवातकृत्। अह्रद्यः श्रमतृट्कासज्वरारुचिकृमिप्रणुत्॥
व्रणपित्तकफच्छर्दिकुष्ठहृल्लासमेहनुत्। निम्बपत्रं स्मृतं नेत्र्यं कृमिपित्तविषप्रणुत्॥
वातलं कटुपाकं च सर्वारोचककुष्ठनुत्। नैम्बं फलं रसे तिक्तं पाके तु कटु भेदनम्॥
स्निग्धं लघूष्णं कुष्ठघ्नं गुल्मार्शःकृमिमेहनुत्।' (भा. प्र.)

'निम्बस्तिक्तरसः शीतो लघुः श्लेष्मास्रपित्तनुत्।
कण्डूकुष्ठव्रणान् हन्ति लेपाहारादिशीलितः॥
अपक्वं पाचयेच्छोथं व्रणं पक्वं विशोधयेत्।' (व. नि.)

'निम्बस्तिक्तः कटुः पाके लघुः शीतोऽग्निवातकृत्।
ग्राही हृद्यो जयेत्पित्तकफमेहज्वरक्रिमीन्॥
कुष्ठकासारुचिच्छर्दिहृल्लासश्वयथुव्रणान्। ग्राहि प्रवालं निम्बस्य रक्तपित्तकफक्रिमीन्॥
कुष्ठघ्नं वातजननं नेत्ररोगान् विनाशयेत्। तद्वत्पत्राणि निम्बस्य व्रणघ्नानि विशेषतः॥
शलाका निम्बपत्रस्य कासश्वासविनाशिनी।
कृमिघ्ना तु वरिष्ठा स्यात् कुष्ठज्वरविनाशिनी॥

गुण एवं दोष-

धन्वन्तरी निघण्टु के अनुसार– निम्ब के गुण- नीम तिक्तरस, शीतल तथा लघु है और यह कफ विकार, रक्त विकार तथा पित्त विकार को दूर करता है। यह कुष्ठ रोग, कण्डू तथा व्रण का नाश करता है, लेप एवं आहार में प्रयोग करने से अपव्रणशोथ को पकाता है तथा पक्वव्रण का शोधन करता है।

राजनिघण्टु के अनुसार- प्रभद्रक (नीम) शीतल तथा तिक्तरस है और यह कफ विकार, व्रण, क्रिमी रोग तथा शोथ की शान्ति के लिए होता है। यह कफ भेदक है, बहुप्रकार के पित्त दोषों को जीत लेता है तथा यह विशेषकर हृदय के दाह को शान्त करता है।

भावप्रकाश के अनुसार- नीम, शीतल, लघु तथा ग्राही है और कटुपाकी है तथा पित्त विकार तथा वात विकार को दूर करता है। यह अहृद्य है तथा श्रमजन्य कास, ज्वर, अरुचि तथा क्रिमिरोग को दूर करता है। यह व्रण, पित्त विकार, कफ विकार, वमन, कुष्ठ रोग उबकाई तथा प्रमेह को दूर करता है। नीम का पत्र नेत्र के लिए हितकर है और क्रिमिरोग, पित्त विकार तथा विष विकार को दूर करता है। यह वातकारक है, कटुपाकी है तथा सभी प्रकार के अरोचक एवं कुष्ठ रोग को दूर करता है। नीम का फल रस में तिक्त तथा पाक में कटु है एवं मल भेदक है, स्निग्ध है, लघु है, उष्ण है, कुष्ठनाशक है तथा गुल्मरोग, अर्शरोग, क्रिमिरोग एवं प्रमेह को दूर करता है।

राजवल्लभ के अनुसार- नीम पित्त विकार, कफ विकार, वमन एवं व्रण को दूर करता है तथा वात, कुष्ठ का नाश करता है।

धन्वन्तरी निघण्टु के अनुसार– महानिम्ब के गुण- महानिम्ब रस में तिक्तरस है तथा शीतपित्त एवं

कफ रोग को दूर करता है। यह कुष्ठरोग तथा रक्तविकार का नाश करता है और शीतल होने से विसूचिका रोग का नाश करता है।

राजनिघण्टु के अनुसार- महानिम्ब शीतल, कषायरस, कटुरस तथा तिक्तरस है और यह रक्तविकार, दाह तथा कफ का नाश करता है एवं विषमज्वर को शान्त करता है।

भावप्रकाश के अनुसार- महानिम्ब शीतल, रूक्ष तथा तिक्त रस है, ग्राही है एवं कषाय रस है। यह कफ विकार, पित्त विकार, भ्रम, वमन, कुष्ठ रोग, उबकाई तथा रक्त विकार का नाश करता है। यह प्रमेह, श्वास, गुल्म, अर्श रोग तथा मूषिक विष का नाश करता है।

राजवल्लभ के अनुसार- महानिम्ब उत्तमग्राही है, कषाय तथा अम्लरस है और शीतल है।

वैद्यकशास्त्र में नीम का प्रयोग-

कुष्ठ रोग में नीम का प्रयोग- नीम तथा परवल आदि के ६ कषाय योग खाने तथा पान करने से कुष्ठ नाशक कहे गये हैं। (च.चि.अ. ७)।

१. **जातसत्व कुष्ठ में नीम के क्वाथ का प्रयोग**- जातसत्व कुष्ठ में नीम का क्वाथ पान करे। (सु. चि.अ. ९) २. **सुरामेह में नीम कषाय का प्रयोग**- सुरामेह के रोगी को नीम कषाय पान कराये। (सु.चि.अ. ११) ३. **अरूंषिका में नीमजल का प्रयोग**- अरूंषिका रोग में रक्त के निर्हरण करने के बाद नीम के जल से सेचन करे। (सु.चि.अ. २०) ४. **पद्मिनी कण्टक में नीम का प्रयोग**- पद्मिनी कण्टक के उत्सादन में नीम तथा अम्लतास के क्वाथ का प्रयोग हितकर होता है। (सु.चि.अ. २०) ५. **दाहज्वर में निम्ब का प्रयोग**- नीम के पत्तों का क्वाथ मधु तथा फाणित मिलाकर बुद्धिमान चिकित्सक दाहज्वर से पीड़ित व्यक्ति को शीघ्र ही वमन कराये। (सु.उ.अ. ३९) ६. **कफज प्यास में निम्ब का प्रयोग**- नीम के पत्र के जल को थोड़ा गरम कर वमन कराना कफज तृष्णा में हितकर है। (सु.उ.अ. ४८)

१. **वातरक्त में निम्ब पत्र का प्रयोग**- परवल तथा नीम के पत्तों का क्वाथ बनाकर तथा मधु मिलाकर पान कराने से वातरक्त का पाचन होता है तथा उसका शमन होता है। (हारीत.चि.अ. २५) वातरक्त की प्रशान्ति के लिए नीम के पत्तों को काञ्जी के साथ पीसकर लेप करना प्रशस्त होता है। (हारीत.चि.अ. २५) २. **व्रण शोधनार्थ निम्बपत्र का प्रयोग** - नीम के पत्तों का शुष्क मधु मिलाकर लेप करने से व्रण का शोधन होता है। (हारीत.चि.अ. ३५) ३. **दन्त रोग में निम्ब मूलका प्रयोग**- नीम के जल का क्वाथ दन्त रोग को शान्त करता है। (हारीत.चि.अ. ४५) ४. **विष प्रतिकार में नीम का प्रयोग** - नीम के फलों का गरम जल के साथ पान करने से तत्काल विष विकार शान्त होता है। (हारीत.चि.अ. ५५)

१. **खालित्य रोग में तथा पलित रोग में निम्ब तैल का प्रयोग**- खालित्य तथा पलित रोग में एक मास तक नीम के तैल का नस्य ले और दूध भात खाय। (वाग्भट उ. अ. २४) २. **व्रण संशोधन में निम्बपत्र का प्रयोग**- नीम के कल्क में मधु मिलाकर लेप करना उत्तम व्रण शोधक होता है। (वाग्भट उ. अ. २५)

१. **उदर्द कोठ आदि में निम्बपत्र का प्रयोग**- नीम के पत्तों को पीसकर घृत के साथ आँवला का रस मिलाकर प्रयोग करे। यह शीघ्र ही विस्फोट, कोठ, क्षत, शीत पित्त, कण्डू तथा अम्ल पित्त का नाश करता है। (चक्र. अम्लपित्त चि.) २. **कामला में निम्ब का प्रयोग**- कामला रोग में नीम के पत्ते का रस मधु मिलाकर प्रातः काल सेवन करने से कामला रोग का नाश होता है। (चक्र. पाण्डुरोग चि.)

१. **गृध्रसी में महानिम्ब मूल का प्रयोग**- महानिम्ब के मूल को जल के साथ पीस कर पान करने से

शीघ्र ही असाध्य गृध्रसी रोग नाश होता है। (वंगसेन वातव्याधि अधिकार) २. **कफज हृदय रोग में नीम का प्रयोग**- हृदय में कफज पीड़ा होने पर नीम के कषाय पान कराकर वमन कराये। (वंगसेन हृद्रोगाधिकार) ३. **नेत्ररोग में निम्बका प्रयोग**- सौंठ तथा नीम के पत्तों का कल्क बनाकर उसको थोड़ा गरम कर और उसमें थोड़ा सेन्धा नमक मिलाकर नेत्र के ऊपर धारण करे। यह शोथ, कण्डू तथा पीड़ा को दूर करता है। (वंगसेन नेत्ररोगाधिकार) ४. **बच्चों के ज्वर में निम्ब का प्रयोग**- नीम के पत्तों का चूर्ण मधु तथा घृत मिलाकर धूपन करना बालकों के ज्वर के वेग को शीघ्र ही नष्ट करता है। (वंगसेन बालरोगाधिकार)

१. **द्रव्य विष के पीरपाक के लिए नीम बीज का प्रयोग**- मधूकर (महुआ), मालूर, अमलतास, परुष खजूर तथा कैथ के खाने से अजीर्ण होने पर उसके पाक के लिए नीम का बीज घृत में या मट्ठा में पान कराये। उनके लिए यही पथ्य है। (भाव. म. ख. अ. २) २. **क्रिमि रोग में निम्ब पत्र का प्रयोग**- क्रिमिरोग में नीम के पत्ते का रस मधु मिलाकर पान कराये। (भाव. म. ख. अ. २) ३. **रक्तपित्त में शाक के लिए नीम पत्र का प्रयोग**- परवल, नीम, वेंत, पकड़ी तथा वेंत के पल्लव का शाक रक्तपित्त में शाक खानेवालों के लिए हितकर है। (भाव. म. ख. २) ४. **व्रण में क्रिमि नाश के लिए निम्ब का प्रयोग**- हींग तथा नीम के पत्तों का कल्क बनाकर लेप तैयार करे। यह लेप करने से व्रण के क्रिमियों का नाश होता है। (भाव.म.ख.अ.३)

... Noncrystalline resinous substance—the active principle,